

## नोएडा एयरपोर्ट पर देश के सबसे बड़े मेंटेनेंस, रपियरगि और ओवरहालगि (एमआरओ) के नरिमाण का रास्ता साफ

### चर्चा में क्यों?

25 अक्टूबर, 2022 को जेवर में बन रहे क्षेत्रफल के हिसाब से दुनिया के चौथे सबसे बड़े एयरपोर्ट के दूसरे चरण के नरिमाण के लिये मार्ग पूरी तरह से प्रशस्त हो गया है। इससे नोएडा एयरपोर्ट पर देश के सबसे बड़े मेंटेनेंस, रपियरगि और ओवरहालगि (एमआरओ) के नरिमाण का रास्ता भी साफ हो गया है।

### प्रमुख बडि

- पहले चरण के नरिमाण लिये 1334 हेक्टेयर भूमिपूर्व में अधगिरहण हो चुका है। इस पर नरिमाण कार्य शुरू है। दूसरे चरण के नरिमाण के लिये भूमि मलिन की बाधा थी, पर उत्तर प्रदेश सरकार के प्रयासों से छह गाँवों के किसान अपनी 1365 हेक्टेयर भूमि नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट लिमिटेड (नयाल) को देने को तैयार हो गए हैं।
- नए भूमि अधगिरहण कानून के हिसाब से किसी भी परियोजना के लिये भूमि अधगिरहण हेतु परभावति होने वाले 70 प्रतिशत किसानों की सहमति ज़रूरी है। 7164 किसानों में से करीब 80 प्रतिशत ने अपनी मंजूरी दे दी है। नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट लि. (नयाल) के पास अब 2699 हेक्टेयर भूमि हो जाएगी।
- एयरपोर्ट के लिये कुल 6200 हेक्टेयर भूमि आरक्षणित है। क्षेत्रफल के मामले में नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट दुनिया का चौथा सबसे बड़ा एयरपोर्ट होगा। इससे पहले कंगि फहद इंटरनेशनल एयरपोर्ट सऊदी अरब, डेनवर इंटरनेशनल एयरपोर्ट व डलास इंटरनेशनल एयरपोर्ट अमेरिका आदि तीन एयरपोर्ट ही क्षेत्रफल के मामले में सबसे बड़े हवाई अड्डों में शुमार थे। हालाँकि, रनवे के मामले में दूसरे अन्य एयरपोर्ट बड़े हैं। यहाँ कुल पाँच रनवे बनने हैं।
- उल्लेखनीय है कि जेवर में बन रहे नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट का नरिमाण अलग-अलग चरणों में पूरा होगा। पहले चरण के लिये 1334 हेक्टेयर भूमि पर दो रनवे का नरिमाण कार्य शुरू है। पहले फेज का नरिमाण भी चार भागों में होगा। एक रनवे का नरिमाण कार्य 2024 में पूरा हो जाएगा। इस पर करीब 5700 करोड़ रुपए खर्च होंगे।
- एयरपोर्ट के चालू होने पर शुरुआती दौर में सालाना एक करोड़ 20 लाख यात्री सफर करेंगे। संख्या बढ़ने पर दूसरे चरण में एक और रनवे का नरिमाण होगा। बाकी दो और रनवे का नरिमाण अगले चरणों में होगा। चारों चरण पूरे होने पर एयरपोर्ट से सालाना करीब सात करोड़ यात्री सफर करेंगे।
- इस परियोजना पर कुल 30 हजार करोड़ रुपए खर्च होने का अनुमान है। एयरपोर्ट के नरिमाण के लिये दूसरे चरण में जसि भूमि को लिया जा रहा है, उस पर एक रनवे व एयरक्राफ्ट मेंटेनेंस, रपियरगि और ओवरहालगि (एमआरओ) का केंद्र बनेगा।
- वदिति है कि देश के 85 प्रतिशत हवाई जहाज़ मेंटेनेंस रपियर, ओवरहालगि के लिये वदिश जाते हैं। इस पर सालाना 15 हजार करोड़ रुपए खर्च होते हैं। यह रकम वदिश चली जाती है। नोएडा एयरपोर्ट एमआरओ का बड़ा केंद्र बनने से वदिश जाने वाली मुद्रा की बचत होगी और युवाओं को रोज़गार भी मलिया।